बबलू ने ही यह लीड फेंकी होगी; झाड़ू लगाते समय उसे खाट के नीचे मिली थी। अभी पूरी तरह खत्म भी नहीं हुई कि फेंक दी! ऐसी ही फिजूल-खर्चियों पर पप्पा नाराज होते हैं।

खैर, जाने दो, अपना तो काम ही बना। कागज और लिफाफा पप्पा के झोले से निकाल ही चुकी हूँ; उनको पता नहीं चला, नहीं तो जरूर पूछते।

अब जल्दी लिख लेना है मुझे। देर करूँगी तो फिर मौका नहीं मिलेगा। अभी माँ की आँख लगी है; कुछ देर तो नहीं ही जगेगी। छोटकी भी माँ का दूध चूसते-चूसते सो गई है। वह अगर जाग गयी तो आफत है; उसे लादे फिरना होगा।

क्या लिखूँ? कैसे शुरू किया जाता है?... अच्छा लिख देती हूँ... प्यारे प्रधान... ऊँह! यह प्यारे-व्यारे क्या लिखना! वह कोई बच्चे थोड़े ही हैं जो! तब ...?

परम प; प में कौन-सा उ लगेगा? बड़ा या छोटा? माँ को जगाकर पूछूँ? उहँ, उसे भी आता होगा? और वह जग गयी तो लिखना ही नहीं होगा। लिख देती हूँ कुछ भी।

लेकिन गलत हुआ तो बात बिगड़ सकती है। जिस लड़की को सही लिखना तक नहीं आता, उसकी बात कौन सुनेगा? लेकिन... लेकिन क्यों नहीं सुनी जाएगी मेरी बात? हिज्जे गलत हों, पर बात तो सही है! जो हो, लिख देती हूँ सीधे-सीधी।

जय माता रानी! जय गणेश जी! और पड़ोस वाली बिना बात-बात पर किन्हें याद करती है?... हाँ... या रब्बा!... मुझे आज यह चिट्ठी लिखवा दो, लिखवा दो जी, भगवान! मेरी कोई मदद करने वाला नहीं है। कोई नहीं।

उसकी आँखें भर आयीं, लेकिन वह रोकर समय बरबाद नहीं करना चाहती थी। इसलिए जैसे-तैसे लिखने ही लगी।

प्रधानमंत्री जी,

प्रणाम!

मैंने सुना है, बंधुआ मजदूरों को उनके मालिक से छुड़ाया जा रहा है। मुझे भी छुड़ा दीजिए न! मेरी पढ़ाई नहीं हो सकी है। पप्पा कहते हैं, बाद में देखा जाएगा, बाद में, यानी कभी नहीं। बारह की तो हो गई। मेरे तीनों भाई स्कूल जाते हैं। सब मुझ से छोटे हैं। बबलू जो मुझ से साल भर ही छोटा है, अपने जूठे बर्तन तक नहीं धोता। गुड्डू नौ साल का है। वह तो बबलू से भी ज्यादा कामचोर है। मुन्नू सात साल का है; वह बेचारा अक्सर बीमार ही रहा करता है। रीता पाँच साल की है, मीता तीन की और छोटकी साल भर की; वह भी भात खाने लगी है।

मैं दिन भर घर के कामों में लगी रहती हूँ। पप्पा कहते हैं, मैं माँ से भी अच्छी रोटियाँ बनाने लगी हूँ। लेकिन माँ की तरह सब्ज़ी नहीं बना पाती सो रोज़ डाँट सुनती हूँ।

© BSTBPC
WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

माँ कहती है, मैं बनाना नहीं चाहती सो बिगाड़ देती हूँ। लेकिन क्या करूँ, मुझसे हो ही नहीं पाता। सारे बर्तन मुझे ही माँजने पड़ते हैं। मुन्नू, रीता, मीता और अब छोटकी सब को मैं ही टाँगती रही हूँ। सबके कपड़े भी मुझे ही धोने पड़ते हैं। एक काम से दूसरे काम के बीच मुझे सुस्ताने का भी समय नहीं मिलता, फिर भी सब कहते हैं- गुड्डी धीमर है।

परसाल के पहले वाले साल, मामा जी की जिद पर मेरा नाम स्कूल में लिखवाया गया था, एक महीने ही तो जा पायी। उसी समय छोटकी हो गई सो माँ अकेले घर नहीं चला पायी, मुझे स्कूल छोड़ देना पड़ा। मैंने माँ से कहा था, मुझे भी पढ़ने दो, पप्पा ने सुना तो बोले कि जैसे घर ही में ककहरा सीखा है, वैसे ही आगे भी कुछ पढ़ ले। लेकिन घर में मुझे कौन पढ़ायेगा। और कब? मैं अपनी मर्जी से स्कूल जा नहीं सकती, किसी से कुछ कह नहीं सकती। क्या यह सच है कि बंधुआ मजदूरों को छुड़ा दिया गया है? तो मुझे भी छुड़वा दीजिए न!

आपकी बेटी (गीता) गुड्डी

हाय! पप्पा तो आ गए।

गुड्डी ने झट से चिट्ठी मोड़ कर छिपा ली। लीड्ड को फिर खाट के नीचे ही फेंक दिया और दौड़ पड़ी। जल्दी दरवाजा नहीं खुला तो पप्पा बिगड़ने लगते हैं।

"माँ कहाँ है?"

"सोयी है, बरामदे में।" वह हकलाकर बोली, जैसे चोरी करते पकड़ी गई हो।

"जा, चाय बना ला।"

बनवा लो चाय, बनवा लो! जितने दिन प्रधानमंत्री जी मुझे नहीं छुड़वा देते, उतने दिन खटवा लो। बस, अब सबकी आँख बचाकर पता लिख लेना है। और टिकट? टिकट कहाँ से लाऊँ? बिना टिकट के ही भेज देती हूँ। वे तो समझ ही जाएँगे। मेरे लिफाफे को खोलने के पहले ही मेरी हालत भाँप जाएँगे।

माँ-बाप के लिए चाय बनाकर ले जाते हुए उसके पैरों में फुर्ती-सी आ गयी और मन आनन्द से भर गया। उसे लगने लगा जैसे उसकी मुक्ति की घोषणा में अधिक दिन बाकी नहीं है।

–सुधा

शब्दार्थ

बिगाड़- ख़राब **धीमर**–सुस्त **गोपनीय**–छिपाने योग्य **मुक्ति**–छुटकारा

प्रश्न-अभ्यास

© BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

पाठ से

1. गुड्डी अपनी तुलना बंधुआ मजदूर से क्यों करती है?
2. माँ-बाप के लिए चाय बनाकर लाते समय उसके पैरों में फुर्ती आ गयी- क्यों?
3. **पढ़िए एवं सोचकर उत्तर दीजिए-**
   (i) "लेकिन क्यों नहीं सुनी जाएगी मेरी बात। हिज्जे गलत हों, पर बात तो सही है।"
   (क) ऐसा गुड्डी ने क्यों सोचा?
   (ख) यह वाक्य गुड्डी के व्यक्तित्व की किन विशेषताओं को दर्शाता है?
   (ii) "टिकट कहाँ से लाऊँ? बिना टिकट के ही भेज देती हूँ। वे तो समझ ही जाएँगे।"
   (क) गुड्डी ने ऐसा क्यों सोचा?
   (ख) यह वाक्य गुड्डी के किस पक्ष को दर्शाता है?
4. पठित पाठ के आधार पर आपके मस्तिष्क में जो दृश्य उत्पन्न होता है, उसे अपने शब्दों में लिखिए।

पाठ से आगे

1. इस कहानी का शीर्षक 'जन्म-बाधा' है। आपकी दृष्टि में ऐसा शीर्षक क्यों दिया गया है?
2. किन-किन बातों से पता चलता है कि गुड्डी अपनी मुक्ति के लिए दृढ़संकल्प थी?
3. अपनी मुक्ति के लिए गुड्डी प्रधानमंत्री को चिट्ठी लिखती है। इससे इसके माता-पिता परेशानी में पड़ सकते हैं। गुड्डी के इस व्यवहार पर तर्क सहित विचार कीजिए।

गतिविधि

1. उन कारणों का पता लगाइए जो छोटी-छोटी लड़कियों पर बड़ी जिम्मेदारियाँ लादने के लिए जिम्मेदार हैं।
2. **निम्नलिखित कार्य कौन करता है**
   (क) गुड़ियों से खेलना।
   (ख) सिलाई-बुनाई का कार्य करना।
   (ग) झाड़ू-बर्तन, चूल्हा-चौका का काम घर में करना।
   (घ) घर में अपने छोटे भाई-बहनों को संभालना।
   सोचिए क्या यह सही है?
3. प्रतिदिन किए गए कार्यों की सूची बनाइए, फिर अगले दिन उस सूची में कुछ नया जोड़िए।

WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

13 शक्ति और क्षमा

क्षमा, दया, तप, त्याग, मनोबल
सबका लिया सहारा,
पर नर-व्याघ्र, सुयोधन तुमसे
कहो कहाँ, कब हारा?
क्षमाशील हो रिपु समक्ष
तुम हुए विनत जितना ही,
दुष्ट कौरवों ने तुमको
कायर समझा उतना ही।

क्षमा शोभती उस भुजंग को
जिसके पास गरल हो,
उसको क्या, जो दंतहीन,
विषहीन, विनीत, सरल हो।
तीन दिवस तक पंथ माँगते
रघुपति सिन्धु किनारे,
बैठे पढ़ते रहे छंद
अनुनय के प्यारे-प्यारे।

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

उत्तर में जब एक नाद भी
उठा नहीं सागर से;
उठी अधीर धधक पौरुष की
आग राम के शर से।
सिन्धु देह धर 'त्राहि-त्राहि'
करता आ गिरा शरण में,
चरण पूज, दासता ग्रहण की
बँधा मूढ़ बंधन में।

सच पूछो, तो शर में ही
        वसती है दीप्ति विनय की,
संधि-वचन संपूज्य उसी का
        जिसमें शक्ति विजय की।
सहनशीलता, क्षमा, दया को
        तभी पूजता जग है,
बल का दर्प चमकता उसके
        पीछे जब जगमग है।

–रामधारी सिंह 'दिनकर'

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

शब्दार्थ

रिपु– शत्रु, दुश्मन
पौरुष–पुरुष का कर्म
गरल– विष, जहर
नाद–आवाज़, शब्द
अनुनय–प्रार्थना, विनय
भुजंग– साँप
दर्प– रोब, अभिमान
विनत–विनीत, नम्र, झुका हुआ
शर–बाण, तीर, बरछी
विनीत–नम्र

प्रश्न-अभ्यास

पाठ से

1. इस कविता के माध्यम से हमें क्या सीख मिलती है?
2. वे कौन-सी परिस्थितियाँ थीं जिन्होंने राम को धनुष उठाने पर बाध्य किया?

3. निम्नलिखित पंक्तियों का अर्थ स्पष्ट कीजिए-

क्षमा शोभती उस भुजंग को
    जिसके पास गरल हो।
उसको क्या, जो दंतहीन,
    विषहीन, विनीत, सरल हो।

पाठ से आगे

1. दिनकर के इस भाव से आप कहाँ तक सहमत है कि समाज शक्तिशाली की ही पूजा करता है? अभावहीन, निर्बल व्यक्ति को समाज में कोई नहीं पूछता। इन पर आप अपना विचार स्पष्ट कीजिए।
2. सुयोधन को नर-व्याघ्र क्यों कहा गया है?

व्याकरण

1. निम्नलिखित शब्दों के पर्यायवाची शब्द लिखिए-

भुजंग
रघुपति
सिंधु
शर
कायर
निर्भ

© BSTBPC WEBCOPY, NOT TO BE PUBLISHED

गतिविधि

1. दिनकर के जीवन से संबंधित कुछ जानकारियाँ इकट्ठी कीजिए तथा उनके जन्म दिन पर अपने स्कूल में जयन्ति मनाइए।
2. दिनकर की अन्य रचनाओं का संकलन कर कक्षा में सुनाइए।
3. इस कविता को सुंदर हस्तलेख तथा बड़े अक्षरों में लिखकर कक्षा में प्रदर्शित कीजिए।

14 हिमशुक

बहुत समय पहले अवध में एक राजा राज्य करता था। उसके तीन लड़के थे। तीनों बहुत पढ़े-लिखे, बुद्धिमान और गुणी थे।

एक दिन राजा ने अपने तीनों राजकुमारों को परीक्षा लेने के लिए बुलाया। वह जानना चाहता था कि किसी दोषी को सज़ा देने के मामले में उन तीनों के क्या विचार हैं।

"मान लो," उसने कहा, " अगर मैं अपने जीवन और सम्मान की रक्षा की जिम्मेदारी किसी को सौंप दूँ और वह विश्वासघाती निकले तो उसे क्या सज़ा दी जानी चाहिए?"

सबसे बड़े लड़के ने कहा, "ऐसे आदमी की गरदन फौरन धड़ से अलग कर देनी चाहिए।"

दूसरे लड़के ने कहा, "मेरा भी यही विचार है। ऐसे आदमी को मृत्युदंड ही मिलना चाहिए। उसके साथ किसी तरह की दया नहीं दिखाई जानी चाहिए।"

तीसरा लड़का चुप बैठा रहा।

"क्या बात है, मेरे बेटे?" राजा ने उससे पूछा, "तुम कुछ नहीं बोले, तुम्हारा क्या विचार है?"

"महाराज," छोटे राजकुमार ने कहा, "यह सच है कि ऐसे कुसूर की सज़ा मौत के सिवा और कुछ नहीं हो सकती। लेकिन सज़ा देने से पहले यह बात साफ-साफ और पूरी तरह से साबित हो जानी चाहिए कि वह सचमुच ही दोषी है।"

"यानी, तुम्हारे विचार से ऐसा न किया गया तो निर्दोष आदमी भी मारा जा सकता है।" राजा ने पूछा।

"हाँ," राजकुमार ने जवाब दिया, "ऐसा हो सकता है। उदाहरण के लिए मैं आपको एक कहानी सुनाता हूँ।"

ऐसा कहकर राजकुमार ने यह कहानी सुनाई।

विदर्भ देश के राजा के पास एक अनोखा तोता था। उस तोते का नाम हिमशुक था। वह महल में पालतू पक्षी की तरह रहता था। हिमशुक बड़ा चतुर था। वह कई भाषाओं में बात कर सकता था। बुद्धिमान इतना था कि अक्सर राजा भी महत्त्वपूर्ण मामलों में उसकी राय लिया करता था।

हिमशुक पिंजरे में नहीं रहता था। वह अपनी इच्छा के अनुसार आज़ादी से घूमता रहता था। एक

© BSTBPC WEB COPY, NOT TO BE PUBLISHED

दिन सवेरे वह महल से उड़कर जंगल की ओर निकल गया। वहाँ संयोग से उसकी भेंट अपने पिता से हो गई।

"तुमसे मिलकर मैं कितना प्रसन्न हुआ हूँ," उसके पिता ने कहा, " तुम्हारी माँ भी तुमसे मिलकर इतना ही प्रसन्न होगी। क्या तुम दो-चार दिन के लिए घर नहीं आ सकते?"

"घर आने की तो मुझे भी बड़ी इच्छा थी," हिमशुक ने कहा, "मगर इसके लिए मुझे राजा से अनुमति लेनी पड़ेगी।"

महल वापस जाकर हिमशुक ने राजा से घर जाने की आज्ञा माँगी। शुरू में तो राजा उसे जाने देने के लिए राजी नहीं हुआ। वह हिमशुक को बहुत मानता था और अपने से अलग नहीं करना चाहता था। पर अंत में वह मान गया। उसने हिमशुक को घर जाने की अनुमति दे ही दी।

" तुम घर जाकर अपने माँ-बाप के साथ कुछ दिन बिता सकते हो," राजा ने हिमशुक से कहा, "लेकिन जितनी जल्दी हो सके लौट आना।"

"बहुत अच्छा महाराज," हिमशुक ने कहा, "मैं पंद्रह दिन बाद वापस आ जाऊँगा।" इसके बाद हिमशुक अपने पिता के पास गया और वे दोनों, साथ-साथ उड़ते हुए, घर की ओर रवाना हुए। इतने वर्ष बाद अपने प्यारे बेटे हिमशुक को देखकर उसकी माँ बहुत खुश हुई।

एक पखवाड़े तक अपने माँ-बाप के साथ रहने के बाद हिमशुक ने उनसे कहा, "मेरे ये दिन अपने प्रियजनों के साथ बड़े ही सुख से बीते हैं, मगर अब मुझे जाना होगा। राजा मेरी राह देख रहे होंगे।"

हिमशुक के माँ-बाप उसके इतनी जल्दी जाने की बात सुनकर उदास हो गए। परंतु वे उसे रोक नहीं सके। हिमशुक ने राजा से वादा किया था कि वह पंद्रह दिन के बाद लौट आएगा।

"हम राजा के लिए कोई उपहार भिजवाना चाहते हैं," हिमशुक के पिता ने कहा, "लेकिन समझ में नहीं आता कि कौन-सी चीज भिजवाएँ।"

हिमशुक के माता और पिता दोनों ही इस बात पर विचार करने लगे कि राजा को देने लायक उपहार क्या हो सकता है? कुछ देर सोचने के बाद हिमशुक के पिता ने कहा, "अहा, मैं समझ गया कि राजा के लिए सबसे अच्छा उपहार क्या हो सकता है। यहीं से दूर एक पहाड़ी पर अमरफल का पेड़ है। जो कोई उसका फल खा लेता है वह कभी नहीं मरता और हमेशा जवान रहता है। मैं वहाँ जाकर एक फल तोड़ लाता हूँ। तुम वह फल राजा को दे देना।"

फल मिलते ही हिमशुक राजा के महल की ओर रवाना हुआ। शाम हो चली थी। थोड़ी ही देर में सूरज डूब गया और चारों ओर रात का घना अंधकार छा गया। हिमशुक ने किसी पेड़ की डाल पर बैठकर रात काटने का इरादा किया। मगर इससे पहले वह उस कीमती फल को किसी सुरक्षित स्थान में रखना

BSTBPC WEBCOPY NOT TO BE PUBLISHED

चाहता था। किस्मत से उसे एक ऐसा पेड़ मिल गया जिसके तने में एक खोखला छेद था। उसने उस छेद में अमरफल रख दिया और पास ही एक डाल पर बैठ सुस्ताने लगा। थोड़ी ही देर में उसे नींद आ गई।

पेड़ का वह खोखला छेद एक जहरीले साँप का घर था। जब साँप लौटकर आया तो उसकी नजर चमकते हुए अमरफल पर पड़ी। उसने सोचा वह शायद कोई खाने की चीज है। साँप ने फल पर दाँत गड़ा दिए। मगर उसे फल का स्वाद अच्छा नहीं लगा। उसने उसे वैसा ही छोड़ दिया। लेकिन जिस समय साँप ने फल पर दाँत गड़ाए, उस समय उसके दाँतों से कुछ जहर भी निकल आया। जहर से फल भी जहरीला हो गया।

दूसरे दिन सवेरे हिमशुक ने फल उठाया और अपनी यात्रा पर उड़ चला। राजमहल पहुँचकर उसने राजा से मुलाकात की और अपने माँ-बाप की ओर से अमरफल भेंट किया।

उस जादुई फल को पाकर राजा इतना खुश हुआ कि उसने फल खाने से पहले एक दरबार करने का निश्चय किया। दरबार में उसके मंत्री और राजपरिवार के सभी सदस्य उपस्थित थे। राजा ने सबके सामने फल उठाया, पर जैसे ही खाने के लिए तैयार हुआ कि मुख्यमंत्री ने टोक दिया।

"महाराज, जरा ठहरिए", मुख्यमंत्री ने कहा, "बुद्धिमानी की बात यह होगी कि फल खाने से पहले इसे किसी जानवर को खिलाकर देख लिया जाए। यदि जानवर को कुछ न हो तो आप भी इसे खा सकते हैं।"

"सुझाव बहुत अच्छा है," राजा ने कहा। उसने फल काटा और एक छोटा सा टुकड़ा एक कौए की ओर फेंक दिया।

कौए ने फल खाया और खाते ही मर गया।

"महाराज," मंत्री ने कहा, "आज आप बाल-बाल बचे हैं। फल जहरीला है। यह अमरफल नहीं मृत्युफल है। इससे यह भी जाहिर है कि फल खिलाकर हिमशुक आपको मारना चाहता था।"

राजा गुस्से के मारे आगबबूला हो गया। उसने लपककर हिमशुक को पकड़ा और बिना

© BSTBPC WEBCOPY: NOT TO BE PUBLISHED

सोचे-समझे उसकी गरदन उड़ा दी। इसके बाद उसने हुक्म दिया कि उस जहरीले फल को नगर के बाहर एक गहरे गड्ढे में दबा दिया जाए।

फल ज़मीन में दफ़ना दिया गया। मगर कुछ ही समय बाद उसका बीज अंकुरित होकर बढ़ने लगा और बढ़ते-बढ़ते पूरा पेड़ बन गया। कुछ समय बाद उस पेड़ में बड़े ही सुंदर, चमकीले, सुनहरे फल लग गए।

जब राजा ने उस विचित्र पेड़ के बारे में सुना तो कहा, "वे फल जहरीले हैं, मौत के फल हैं।"

राजा ने हुक्म दिया कि उस पेड़ के चारों ओर एक बाड़ बना दी जाए और हर समय पेड़ की रखवाली की जाए ताकि कोई भी उन जहरीले फलों को न खा सके। मृत्युफल की खबर सारे शहर में फैल गई। जनता को उस पेड़ के पास फटकने में भी डर लगने लगा।

उन्हीं दिनों उस शहर में एक बूढ़ा और उसकी बुढ़िया रहते थे। वे बहुत गरीब थे। उनका कोई मददगार भी नहीं था। वे किसी तरह दूसरों की मेहरबानी पर गुजर कर रहे थे। बुढ़ापे के मारे वे इतने कमजोर और असहाय हो गए थे कि भीख माँगने भी नहीं जा सकते थे। अकसर फाके करते रहने से उन्हें ऐसा महसूस होने लगा कि अब जीना बेकार है। दोनों ने सोचा कि ऐसी जिन्दगी के बजाय मर जाना कहीं अच्छा है। मरने के लिए सबसे अच्छा यही था कि पेड़ के जहरीले फल खा लिए जाएँ।

एक रात बूढ़ा चुपके से पेड़ के पास गया और पहरेदार की नजर बचाकर बाड़े के अंदर घुस गया। उसने पेड़ से दो फल तोड़े और उन्हें लेकर सीधे घर पहुँचा। घर पहुँचकर उसने और उसकी बुढ़िया दोनों ने एक-एक फल खा लिया। इसके बाद वे तुरंत मरने की आशा से बिस्तर पर लेट गए।

लेकिन दूसरे दिन सवेरे रोज की तरह उनकी आँखें फिर खुल गईं। अपने आपको जिंदा पाकर उन्हें बड़ा ताज्जुब हुआ। इससे भी बड़ा ताज्जुब तो यह था कि वे दोनों जवान हो गए थे। उनकी पहले की चुस्ती और ताकत भी लौट आई थी।

राजा ने यह अनोखी बात सुनी तो वह भी उन दोनों को देखने गया। उन्हें सचमुच ही जवान देखकर वह दंग रह गया। अब जाकर उसकी समझ में आया कि हिमशुक जो फल लाया था वह असली अमरफल था। उसे अपनी जल्दबाजी पर, अपने